© 2018 IJSRST | Volume 4 | Issue 7 | Print ISSN: 2395-6011 | Online ISSN: 2395-602X
Themed Section: Science and Technology

रघुवंशम् के तीन प्रमुख पात्रों दिलीप-रघु-राम का तुलनात्मक विवेचन

डॉ० मृत्युंजय कुमार

प्रखण्ड विकास पदाधिकारी, टनकुप्पा

गया, बिहार, भारत।

सारांश – रघुवंश एक बहुनायकप्रधान महाकाव्य है; जिसमें रघुवंश के 31 राजाओं का चरित्र वर्णित है। सभी राजा का चरित्र विलक्षण है। काव्यशास्त्रीय दृष्टि से नायक को धीरोदात्त आदि कोटि में बाँटा जाता है। रघुवंश के राजागण उदात्त गुणों से युक्त, वीर, प्रतापी, दानी, धार्मिक आदि गुणों से युक्त रहे हैं। दिलीप, रघु और राम का चरित्र विशेष रूप से प्रशंसनीय रहा है। इन तीन नायकों का चरित्र में उत्तरोत्तर विकास होता गया।

प्रमुख शब्द – रघुवंश, नायक, काव्यशास्त्र, चरित्र, गुण, विश्वनाथ, रघु, दिलीप, राम, कालिदास आदि।

संस्कृत वाङ्मय में अलंकार शास्त्र के आचार्यों ने महाकाव्य के लक्षण में कुछ आवश्यक तत्वों का समावेश किया है जिनमें सर्गबन्धता के बाद नायक का उल्लेख है–

सर्गबन्धो महाकाव्यं तत्रैको नायकः सुरः।[(1)]

नायक के साथ नायिका, प्रतिनायक तथा अन्य सहयोगी पुरुष एवं महिला पात्रों की भी उपस्थिति स्वाभाविक रूप से होती है। इन पात्रों के चरित्र में निश्चित रूप से भिन्नता रहती हैं। भरत, धनञ्जय तथा विश्वनाथ आदि आचार्यों ने नायक, नायिका, प्रतिनायक, आदि सबका स्वरूप तथा कार्य निर्धारित कर दिया है। परवर्ती कवि अपनी कृतियों दूत में उन आदर्शों का पालन करते रहे हैं।

आचार्यों ने महाकाव्य में धीरोदात्त कोटि के नायक का विधान किया है। उसे क्षत्रिय या कुलीन वंश में उत्पन्न होना चाहिए। आचार्य विश्वनाथ के मत में एक वंश के कई राजा या उच्च कुलों में उत्पन्न अनेक राजा महाकाव्य के नायक हो सकते हैं। कालिदास–रचित रघुवंश महाकाव्य में कुछ ऐसी ही स्थिति देखी जाती है। आचार्यों द्वारा निरूपित नायक के समस्त गुण रघुवंश के राजाओं में परिलक्षित होते हैं, किन्तु महाकवि कालिदास ने अपने राजाओं को स्वयं की कसौटी पर कसा है। उन्होंने ग्रन्थ के आरंभ में ही आदर्श राजाओं के गुणों का निरूपण किया है –

"सोऽहमाजन्मशुद्धानामाफेलोदय कर्मणाम्।"

वे जन्म से ही पवित्र थे। उन्होंने अपने चरित्र को कभी कलंकित नहीं होने दिया। वे जिस काम को हाथ में लेते थे उसे पूरा करके ही छोड़ते थे। उनके राज्य का विस्तार समुद्रपर्यन्त था –

"आ समुद्र क्षितीशानामानाकरथवर्त्मनाम्।" (2)

उनके रथ की गति सर्वत्र बेरोक–टोक थी। वे विधिपूर्वक यज्ञ करते और याचकों को दान देते थे। वे अपने पराये का विचार किये बिना अपराधी को दण्ड देते थे और अवसर के लिए सदा सतर्क रहते थे। वे दान के लिए धन का संग्रह करते थे तथा यशोविस्तार के लिये विजय–यात्रा करते थे। वे बचपन में विद्याभ्यास करके जवानी में सांसारिक सुखों का उपभोग करते थे। संतान उत्पन्न करने के लिए विवाह करते थे। वे बुढ़ापे में मुनि–वृति धारण कर वनों में चले जाते और अंत में योग द्वारा प्राण–त्याग देते थे। रघुवंशी राजा इन गुणों की कसौटी पर पूरे उतरते थे। उनका चरित्र आदर्श था –

यथाविधिहुताग्नीनां यथा कामार्चितार्थिनाम्।

यथाऽपराधदण्डानां यथाकालप्रबोधिनाम् ॥

त्यागाय सम्भृतार्थानां सत्याय मितभाषिणाम्।

यशसे विजिगीषूणां प्रजायै गृहमेधिनाम्।।

शैशवेऽभ्यस्तविद्यानां यौवने विषयैषिणाम्।

वार्धके मुनिवृत्तीनां योगेनान्तेतनुत्यजाम्।। (3)

रघुवंश के कुछ प्रमुख पात्रों का चरित्र–चित्रण यहाँ प्रस्तुत किया जा रहा है।

1. दिलीप - कालिदास की उत्कृष्ट रचना 'रघुवंश महाकाव्य' एक बहुनायक महाकाव्य है। इसके प्रथम नायक हैं राजा 'दिलीप'। वे शरीर से पुष्ट एवं विशाल, रूप के धनी तथा अपेक्षित गुणों से पूर्णतया समन्वित है। उसमें उत्कृष्ट मैत्री-भाव, अनुचर भाव, राजनीति- कुशलता व्यवहार ज्ञान एवं वीरता के पर्याप्त दर्शन होते हैं।

इस प्रकार प्रकृत शोध प्रबन्ध के इस चतुर्थ अध्याय में विवेच्य काव्य-ग्रन्थ- रघुवंश, जानकीहरण एवं भट्टिकाव्य के प्रमुख पात्रों का तुलनात्मक विवेचन यहाँ प्रस्तुत किया गया है।

2. रघु : - सूर्यवंश में रघु ही ऐसे राजा हुए जिनके कारण उनके आने वाले वंशज राघव कहलाये। ऐसे महापुरूष वंश के कर्ता माने जाते हैं। दिलीप ने गाय से यही वर माँगा था कि "सुदक्षिणा के गर्भ से उसे वंश चलाने वाला पुत्र हो।-

"वंशस्य कर्तारमनन्तकीर्ति सुदक्षिणायां तनयं ययाचे।"(4)

उस वंश में सबसे प्रतापी राम हुए, पर वे तथा उनके पुत्र-पौत्र आदि भी राघव कहलाये। वे वंश को अपना नाम नहीं दे सके। कवि ने इस पृष्ठभूमि पर ही रघु के चरित्र का विकास किया है।

दिलीप तथा सुदक्षिणा के दृढ़ संकल्प और साधना, वशिष्ट के आशीर्वाद एवं नन्दिनी गाय की कृपा के शुभ परिणामों की साकार मूर्ति है- रघु। ओजस्वी रूप-सम्पत्ति, असाधारण बल-पराक्रम एवं हृदय की विशालता के धनी होने पर भी वे अपना बड़ापन प्रकट नहीं होने देते थे। वे अतिथियों के सत्कार और पूजा अर्चना में सर्वथा अग्रणी रहे। उनके आतिथ्य से ही मुग्ध होकर ब्रह्मचारी कौत्स ने कहा था-"पूज्यों की पूजा करना तो आपके वंश का धर्म ही है और आप तो इस (अतिथि सत्कार) बात में अपने पूर्वजों से भी आगे बढ़े हुए हैं-

भक्तिः प्रतीक्ष्येषु कुलोचिता ते पूर्वान्महाभाग! तयाऽतिशेष।(5)

रघु में विनय और वीरता, नम्रता और तेजस्विता एवं शिष्टता और दुर्घर्षता इन विरोधी गुणों का सुन्दर समन्वय है। वे इन्द्र को अवश्मेव के घोड़े का अपहरण-कर्ता जानकर भी विनयपूर्वक यज्ञ में विघ्न नहीं डालने का निवेदन करते हैं। किन्तु नम्रता और सद्भावना से उन्हें नहीं मानते देखकर रघु ललकारते हुए कहते हैं-

"गृहाण शस्त्रं यदि सर्ग एष ते न खल्वनिर्जिव्य रघुकृती भवान्।" (6)

इन्द्र और रघु में युद्ध शुरू होने पर रघु पूरे पराक्रम से लड़ते हुए इन्द्र के धनुष की डोरी को काटते हुए उनका झण्डा गिरा देते हैं। इस पर क्रुद्ध इन्द्र वज्र से रघु पर प्रहार करते हैं। रघु उस प्रहार पर भी लड़ने के लिए डटे रहते हैं। रघु की अभूतपूर्व वीरता को देखकर प्रसन्न होते हुए इन्द्र कहते हैं-

" असङ्गमद्रिष्वपि सारवत्तया न मे त्वदन्येन विसोढ़मायुधम्।" [7]

इन्द्र ने कहा– "पर्वतों के पंख काटने वाले मेरे कठोर वज्र की चोट को तुम्हें छोड़कर आज तक कोई नहीं सह सका। मैं तुम्हारी वीरता पर प्रसन्न हूँ। तुम इस घोड़े को छोड़कर जो कुछ माँगना चाहो, माँग लो।" रघु की वीरता से कुबेर आदि लोकपाल भी भय मानते थे। रघुवंश का चतुर्थ सर्ग रघु की वीरता का ही आख्यान है।

रघु की वीरता और दानशीलता के बहुत प्रमाण हैं। ब्रह्मचारी कौत्स की याचना का प्रसंग जहाँ रघु द्वारा आक्रमण के भय से कुबेर ने अपरिमित स्वर्ण मुद्रा की वर्षा उनके खजाने में कर दी तथा रघु ने पूरी सुवर्ण मुद्रा राशि (याचना से बहुत अधिक) कौत्स को समर्पित कर दी।

इस प्रकार स्पष्ट है कि बहुगुण सम्पन्न रघु कुल–परम्परा के अनुसार शैशवावस्था में समस्त शास्त्रों का अध्ययन करते हैं। युवावस्था में वीरता प्रदर्शित करते हैं तथा दानादि के द्वारा यशोविस्तार करते हैं। वृद्धावस्था में पुत्र को राज्य देकर योग साधना में लीन हो जाते हैं तथा योग के द्वारा ही शरीर त्याग कर देते हैं। इस प्रकार उनका चरित्र महनीय और उत्कृष्ट है।

3. राम - भारतीय परम्परा में राम को आदर्श पुरूष ही नहीं, पुरुषोत्तम (भगवान) माना जाता है। कविकुलगुरु कालिदास यद्यपि शैव थे, फिर भी कुछ अपनी धार्मिक भावना की उदारता के कारण और जनभावना का सम्मान करते हुए उन्होंने राम के प्रति भी भक्ति भाव प्रदर्शित करने हेतु रघुवंश की रचना की तथा इस ग्रन्थ में छः सर्गों (दसवें से लेकर पन्द्रहवें) तक राम का चरित्र अंकित किया है। राम का स्वरूप अत्यन्त मनोरम एवं भव्य था। अतः उनका नाम राम रखा गया–

राम इत्यभिरामेण वपुषा तस्य चोदितः।

नामधेयं गुरुश्चक्रजगत्प्रथममडगलम्।। [8]

मिथिला नगरी में उन्हें देखते ही पुरवासी जन धन्य हो गये। राजा जनक ने उसके किशार सौन्दर्य को देखकर सीता के विवाह के लिये रखी गई अपनी शर्त पर पश्चाताप करने लगे, क्योंकि उन्हें आशा नहीं थी कि श्रीराम उसे उठाकर तोड़ भी देंगे –

तस्यवीक्ष्य ललितं वपुः शिशोः पार्थिवः प्रथितवंशजन्मनः।

स्वं विचिन्त्य च धनुदंगनम पिडितो दुहितशल्कसंस्थया।। [9]

राम के रूप लावण्य पर रावण की छोटी बहन सूर्पणखा मुग्ध हो गई थी।

राम दुखी जनों के प्रति सदैव सदय रहते थे। गौतम ऋषि की पत्नी अहल्या, जो अपनी एक भूल के कारण पत्थर बन गयी थी, पर दया करके उसका उद्धार राम ने कर दिया। सीता की रक्षा करने में रावण की तलवार से घायल जटायु की यथाशक्ति सेवा उन्होंने की, किन्तु उसके प्राण नहीं बचा सकें। तब पिता की तरह मानते हुए शरीर की अन्तिम क्रिया की –

तयोस्तस्मिन्नवीभूतपितृव्यापत्तिशोकयोः।

पितरीवाग्नि संस्कारात्परावृतिरे क्रियाः।। (10)

अप्रतिम रूप–सौन्दर्य एवं उत्कृष्ट गुणों के साथ उनमें शारीरकि बल और शस्त्र–कौशल भी अतुलनीय था। इसी कारण विश्वामित्र ने उन्हें धनुर्वेद के गूढरहस्य एवं विशेष शस्त्रास्त्र प्रदान किये थे। कम आयु में ही उन्होंने सुबाहु तथा ताड़का का संहार किया था, फिर दण्डाकारण्य में विकट राक्षस खरदूषण और उनकी विशाल सेना को नष्ट कर डाला। लंका में अतुलित बलशाली कुम्भकरण एवं रावण के संहार में भी उनका महान् पराक्रम दृष्टिगत हुआ। परशुराम के प्रति आरम्भ में उन्होंने बहुत नम्रता दिखायी थी, किन्तु जब उन्होंने राम के पराक्रम को ललकारा तब उनके अहंकार को राम ने चूर–चूर कर डाला।

राम बहुत चतुर राजनीतिज्ञ थे। बालि के विरूद्ध सुग्रीव की सहायता कर उन्होंने रावण से युद्ध के लिये शक्तिशाली मित्र प्राप्त कर लिया और विभीषण को आश्रय देकर शत्रु के घर में भेदनीति का सफल प्रयोग कर दिखलाया। बालि का राज्य सुग्रीव तथा रावण का राज्य विभीषण को सौंपकर उन्होंने यह भी सिद्ध कर दिया कि वे राज्य के अभिलाषी नहीं थे।

राम प्रकृति से ही बहुत गम्भीर थे। अतः हर्ष के समय खुशी से किलकारी भरने या विषाद के समय फूट–फूटकर रोने का स्वभाव नहीं था। कवि कहते हैं कि राज्याभिषेक के बहुमूल्य वस्त्राभूषण धारण करते समय उनका मुख न तो प्रसन्नता से खिला और न वन जाने के लिये वल्कल पहनते समय विषाद से मलिन हुआ।

दधतो मङ्गलक्षौमे वसानस्य च वल्कले।।

ददृशुर्विस्मितास्तस्य मुखरागं समं जनाः।।(11)

राम अपनी पत्नी सीता से बहुत प्रेम करते थे, किन्तु दाम्पत्य सुख उनके हिस्से में कम ही था। विवाह के कुछ ही समय बाद सीता के साथ वे जंगल चले गये। वहाँ से सीता का अपहरण हो गया। रावण को मारकर लंका से सीता के साथ अयोध्या आने पर उनका राज्याभिषेक हुआ। कुछ ही दिनों बाद रावण के यहाँ सीता के रहने के विषय में प्रजा में फैले प्रवाद को दूत के मुख से जानने पर राम ने सीता का परित्याग कर दिया, किन्तु हृदय से उसे नहीं निकाल सके। जब लक्ष्मण ने लौटकर सीता का अन्तिम सन्देश उन्हें सुनाया तो उनकी आँखों से अश्रुधारा प्रवाहित होने लगी।

बभूव रामः सहसा सबाष्पस्तुषारवर्षीव सहस्यचन्द्रः।

कौलीनभीतेन गृहान्निरस्ता न तेन वैदेहसुता मनस्तः।। (12)

राम उस सीता से इतना प्रेम करते थे कि उन्होंने फिर दूसरा विवाह नहीं किया। अश्वमेघ यज्ञ में विधि-विधान सम्पादित करने हेतु सीता की ही सोने की मूर्ति उसमें प्रतिष्ठित की। किन्तु दूसरी स्त्री का स्पर्श नहीं किया-

सीतां हित्वा दशामुखरिपुर्नोपयेमे यदन्याम्।

तस्या एव प्रतिकृतसखो यत्क्रतूनाजहार।। (13)

एक शासक के रूप में भी राम की बहुत प्रतिष्ठा थी। राम-राज्य सुख-समृद्धि, शान्ति और सदाचार का प्रतीक माना जाता है। आज अच्छे और आदर्श शासन के लिये राम-राज्य का दृष्टान्त दिया जाता है।

इस प्रकार हम देखते हैं कि श्रीराम का चरित्र भारतीयों की दृष्टि में आदर्श मानव का चरित्र है और वे आदर्श पुत्र, आदर्श भाई, आदर्श पति, आदर्श राजा तथा आदर्श सखा के रूप में सदा प्रतिष्ठित हैं।

सन्दर्भ सूची

1. सा॰ द॰ - अध्याय 6
2. रघुवंशम् - 01.5
3. रघुवंशम्- 1/7-8
4. रघुवंशम्- 2.64
5. रघुवंशम्- 5.14

6. रघुवंशम्- 3.51

7. रघुवंशम्- 3.63

8. रघुवंशम्- 10.67

9. रघुवंशम्- 11.38

10. रघुवंशम्- 12.56

11. रघुवंशम्- 12.8

12. रघुवंशम्- 14.84

13. रघुवंशम्- 14.87